सूरतुन्नम्ल

तम्हीदी कलिमात

सूरतुन्नम्ल इस ऐतबार से पूरे क़ुरान में एक मुनफ़रिद सूरत है कि इसमें मक्की सूरतों के तीन मज़ामीन यानि अत्तज़कीर बि-आला अल्लाह, अम्बिया अर्रुसुल और क़ससुन्नबिय्यीन इकट्ठे हो गए हैं। इनमें से दो मज़ामीन पिछली सूरत यानि सूरतुश्शु'अरा में भी आए हैं। वहाँ हज़रात इब्राहीम अलै. का तज़किरा क़ससुन्नबिय्यीन के अंदाज़ में है जबकि बाक़ी सूरत पर अम्बिया अर्रुसुल का रंग ग़ालिब है। इसके मुक़ाबले में सूरतुन्नम्ल इस तीन मौज़ूआत के तहत तक़रीबन बराबर-बराबर तीन हिस्सों में तक़सीम है। इसमें तीन रसूलों (हज़रत मूसा, हज़रत लूत और हज़रत सालेह अलै.) के वाक़िआत अम्बिया अर्रुसुल के अंदाज़ में हैं जबकि हज़रत सुलेमान अलै. का ज़िक्र क़ससुन्नबिय्यीन की तर्ज़ पर है। आख़िर में सूरत का तक़रीबन एक तिहाई हिस्सा अत्तज़कीर बि-आला अल्लाह अल्लाह पर मुश्तमिल है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आयात 1 से 6 तक

طٰسٓ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝ هُدًى وَّبُشْرٰي لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْۗءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝

आयत 1

طٰسٓ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝

"ता,सीन। ये क़ुरान और किताबे मुबीन की आयात हैं।"

अगर "वाव" को वावे तफ़सीरी माना जाए तो फिर तर्जुमा होगा: "ये क़ुरान यानि किताबे मुबीन की आयात हैं।"

आयत 2

هُدًى وَّبُشْرٰي لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

"ये हिदायत और बशारत है अहल ईमान के लिये।"

आयत 3

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝

"जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वही हैं जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।"

यानि आख़िरत पर इनका पूरा यक़ीन है। सूरतुल बक़रह के आग़ाज़ में भी मुत्तक़ीन की सिफ़ात के ज़िमन में अक़ीदा-ए-आख़िरत पर ईमान के लिये

लफ्ज़ يُوْقِنُوْنَ ही इस्तेमाल हुआ है। दरअसल इंसान के अमल और किरदार के अच्छे या बुरे होने का ताल्लुक़ बराहेरास्त अक़ीदा-ए-आख़िरत के साथ है। आख़िरत पर अगर यक़ीन कामिल नहीं है तो इंसान का अमल और किरदार भी दुरुस्त नहीं हो सकता।

आयत 4

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ

"यक़ीनन वह लोग जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिये उनके आमाल को मुज़य्यन कर दिया है"

ऐसे लोगों को अपने ग़लत काम भी अच्छे लगते हैं और अपना कल्चर ही मिसाली नज़र आता है।

فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ Ć

"पस वह भटकते फिर रहे हैं।"

ع م ی के माद्दे में बसारते ज़ाहिरी के अंधेपन का मफ़हूम है, जबकि ع م ہ के माद्दे में बसीरते बातिनी के अंधेपन के मायने पाए जाते हैं। ऐसे लोगों की बसारत तो चाहे दुरुस्त हो मगर बसीरत ख़त्म हो चुकी होती है। इंसान की इस कैफ़ियत को सूरतुल हज (आयत न. 46) में यूँ बयान फ़रमाया गया है: {فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ} "तो असल में आँखें अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों के अन्दर हैं।"

आयत 5

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْۗءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ Ć

"यही वह लोग हैं कि जिनके लिये बहुत बुरा अज़ाब है और यही वह लोग हैं कि जो आख़िरत में सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले होंगे।"

आयत 6

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ Ć

"और (ऐ नबी ﷺ!) यक़ीनन आपको ये क़ुरान दिया जा रहा है एक हकीम और अलीम हस्ती की तरफ़ से।"

आयात 7 से 14 तक

اِذْ قَالَ مُوْسٰي لِاَهْلِهٖٓ اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ Ć فَلَمَّا جَاۗءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي
النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ Ď يٰمُوْسٰٓي اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ Ď وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا
جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰي لَا تَخَفْ ۣ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ 10 اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْـنًۢا بَعْدَ سُوْۗءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ 11 وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۣ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ 12
فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا ھٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ 13 وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ 14

आयत 7

إِذْ قَالَ مُوْسٰي لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ

"याद करो जब मूसा अलै. ने कहा था अपने घर वालों से कि मैंने एक आग देखी है।"

سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ Ć

"मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आऊँगा, या कोई दहकता हुआ अंगारा ले आऊँगा ताकि तुम (आग) ताप सको।"

इबारत के अंदाज़ से ज़ाहिर होता है कि ये रात का वक़्त था, सर्दी का मौसम था और हज़रत मूसा अलै. एक ऐसे इलाक़े से गुज़र रहे थे जिससे उन्हें कुछ वाक़फियत ना थी।

आयत 8

فَلَمَّا جَاۗءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ

"फिर जब वह वहाँ पहुँचे तो उन्हें पुकारा गया कि बहुत मुबारक है वह जो इस आग में है और वह जो इसके आसपास है।"

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ Ď

"और पाक है अल्लाह जो तमाम जहाँनों का परवरदिगार है।"

आयत 9

يٰمُوْسٰٓي اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ Ḍ

"ऐ मूसा! ये तो मैं हूँ, अल्लाह, बहुत ज़बरदस्त, कमाल हिकमत वाला।"

मैं अल्लाह हूँ और मैं ही आपसे इस वक़्त ख़िताब कर रहा हूँ।

आयत 10

وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ

"और अपना असा (ज़मीन पर) डाल दो।"

فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ

"तो जब उसने उसे हरकत करते हुए देखा गोया वह साँप हो तो वह पीठ फेर कर भागा और पीछे मुड़ कर भी ना देखा।"

यानि आप पर शदीद खौफ़ तारी हो गया।

يٰمُوْسٰي لَا تَخَفْ ۣ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ 10گ

"(अल्लाह ने फ़रमाया:) ऐ मूसा! डरो नहीं, मेरे हुज़ूर रसूलों के लिये कोई खौफ़ नहीं होता।"

आयत 11

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ

"सिवाय उसके जिसने कोई ज़ुल्म किया हो"

इस इस्तसना को बाज़ मुफ़स्सरीन ने मुत्तसिल माना है और बाज़ ने मुनक़तअ। मुत्तसिल होने की सूरत में मतलब ये होगा कि जिस रसूल से कोई क़सूर सरज़द हुआ हो उस पर खौफ़ तारी हो सकता है। यानि हज़रत मूसा अलै. पर उस वक़्त खौफ़ का तारी हो जाना उस खता के सबब था जो क़त्ल (अगरचे वह क़त्ले अमद नहीं था, क़त्ले खता था) की सूरत में उनसे सरज़द हुई थी। लेकिन इसके बरअक्स कुछ मुफ़स्सरीन के नज़दीक़ ये इस्तसना-ए-मुनक़तअ है, यानि ये अलग जुमला है और इसका पिछले जुमले के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं है।

ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوْۗءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ 11

"फिर उसने बदल दिया बुराई को नेकी से, तो यक़ीनन मैं बहुत बख़्शने वाला, बेहद मेहरबान हूँ।"

आयत 12

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ

"और ज़रा अपना हाथ दाख़िल करो अपने गिरेबान में, वह निकलेगा सफ़ेद चमकता हुआ बग़ैर किसी मर्ज़ के"

यानि ये सफ़ेदी बर्स या किसी और बीमारी के बाइस नहीं होगी।

فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ

"ये (दो निशानियाँ) फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिये नौ निशानियों में से हैं।"

यानि फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ भेजते हुए अभी आपको सिर्फ़ ये दो निशानियाँ दी जा रही हैं, जबकि कुल नौ (9) निशानियाँ दी जानी मक़सूद हैं। बाक़ी निशानियाँ बाद में मौक़ा-ए-महल और ज़रूरत के मुताबिक़ दी जाएँगी।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ 12

"यक़ीनन वो बड़े नाफ़रमान लोग हैं।"

आयत 13

فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً

"तो जब उनके पास हमारी आँखें खोल देने वाली निशानियाँ आईं"

यानि वह खुली-खुली निशानियाँ जो इनकी आँखे खोलने और हक़ीक़त का मुशाहिदा कराने के लिये काफ़ी थीं।

قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ 13

"उन्होंने कहा कि ये तो खुला जादू है।"

आयत 14

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ

"और उन्होंने उनका इन्कार किया ज़ुल्म और सरकशी के साथ जबकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन किया।"

इस फ़िक़रे में ظُلْمًا وَّعُلُوًّا का ताल्लुक़ आग़ाज़ के लफ्ज़ وَجَحَدُوْا के साथ है। मज़मून के ऐतबार से ये बहुत अहम आयत है। अगरचे उन्होंने बज़ाहिर इन तमाम निशानियों को जादू क़रार देकर हज़रत मूसा अलै. को पैग़म्बर मानने से इन्कार कर दिया था लेकिन उनका ये इन्कार सरासर नाइंसाफी और सरकशी पर मब्नी था, क्योंकि उनके दिल ये हक़ीक़त तस्लीम कर चुके थे कि हज़रत मूसा अलै. वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं और ये तमाम खर्क़े आदत वाक़िआत हक़ीक़त में मौज़ज़ात हैं। मुमकिन है उनके अवाम को ये शऊर ना हो लेकिन कम-अज़-कम फ़िरऔन और क़ौम के बड़े-बड़े सरदारों की उस वक़्त यही कैफ़ियत थी।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ 14

"तो देख लो! कैसा अंजाम हुआ मुफ़सिदों का।"

इस रुकूअ में इज्मालन हज़रत मूसा अलै. का तज़किरा था, अब अगले रुकूअ से हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान अलै. का ज़िक्र शुरू हो रहा है।

आयात 15 से 44 तक

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰي كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ 15 وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا
مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ 16 وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ
17 حَتّٰٓي اِذَآ اَتَوْا عَلٰي وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ 18
فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰي وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ
الصّٰلِحِيْنَ 19 وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ڮ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَاۗىِٕبِيْنَ 20 لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ
لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ 21 فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ 22 اِنِّىْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ
وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّ لَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ 23 وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ
السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۙ 24 اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ 25 اَللّٰهُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ 26 ۩ قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ 27 اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ
عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ 28 قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّىْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ 29 اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
ۙ 30 اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ 31 قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ 32 قَالُوْا نَحْنُ
اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ڏ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ 33 قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً
ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ 34 وَاِنِّىْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ 35 فَلَمَّا جَاۗءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۡ فَمَآ اٰتٰىنِۦ اللّٰهُ
خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ 36 اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ 37 قَالَ يٰٓاَيُّهَا
الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ 38 قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّىْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ
39 قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ڷ لِيَبْلُوَنِيْٓ
ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۭ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ 40 قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ
الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ 41 فَلَمَّا جَاۗءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ 42 وَصَدَّهَا مَا
كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ 43 قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۭ قَالَ اِنَّهٗ
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ڛ قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ 44

आयत 15

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ

"और हमने दाऊद और सुलेमान अलै. को इल्म अता किया था।"

وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰي كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ 15

"और उन दोनों ने कहा कि कुल शुक्र और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर फज़ीलत अता फ़रमाई।"

वह अल्लाह का शुक्र अदा करते थे कि अल्लाह ने उन्हें मोमिनीन के दरमियान एक ख़ास मर्तबा अता किया था।

आयत 16

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ

"और वारिस हुआ सुलेमान अलै. दाऊद अलै. का"

وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ

"और उसने कहा! ऐ लोगों! हमें सिखा दी गई हैं परिंदों की बोलियाँ"

وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ؀16

"और हमें (अल्लाह की तरफ़ से) हर चीज़ अता की गई है। यक़ीनन ये (अल्लाह का) बहुत वाज़ेह फ़ज़्ल है।"

आयत 17

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ؀17

"और जमा किये गए सुलेमान के (मुआयने के) लिये उसके तमाम लश्कर, जिन्नों, इंसानों और परिंदों में से, इस तरह की उन्हें जमातों में मुनज़्ज़म किया जाता था।"

हर क़िस्म और हर जिन्स के लश्कर की अलैहदा-अलैहदा जमातें (battalians) बना कर उन्हें हर तरह से मुनज़्ज़म किया गया था।

आयत 18

حَتّٰٓي اِذَآ اَتَوْا عَلٰي وَادِ النَّمْلِ ۙ

"यहाँ तक कि जब वह चीटियों की वादी में पहुँचे"

हज़रत सुलेमान अलै. अपने लश्करों के साथ सफ़र करते हुए एक ऐसे इलाक़े से गुज़रे जहाँ चींटियाँ कसरत से पाई जाती थीं।

قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ

"तो एक चींटी ने कहा: ऐ चींटियों! तुम सब अपने बिलों में घुस जाओ।"

لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ؀18

"कहीं ऐसा ना हो कि सुलेमान अलै. और उसके लश्कर तुम्हें कुचल कर रख दें और उन्हें इसका अहसास भी ना हो।"

उन्हें अहसास भी नहीं होगा कि उनके क़दमों और घोड़ों के समों तले कितनी नन्ही जानें मसली जा रही हैं।

आयत 19

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا

"तो वह खुश होकर मुस्कुराया उसकी इस बात पर"

हज़रत सुलेमान अलै. ने चींटी की इस बात को सुन भी लिया और समझ भी लिया। चुनाँचे जज़्बाते तशक्कुर के बाइस आपके चेहरे पर बे-इख़्तियार तबस्सुम आ गया और ज़बान पर तराना-ए-हम्द जारी हो गया।

وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰي وَالِدَيَّ

"और उसने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र अदा करूँ तेरी इस नेअमत का जो तूने मुझे और मेरे वालिदैन को अता की है"

وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ 19

"और ये कि मैं अच्छे आमाल करूँ जिनसे तू राज़ी हो, और मुझे दाख़िल करना अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में।"

आयत 20

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَاۗىِٕبِيْنَ 20

"और उसने परिन्दों के लश्कर का मुआयना किया तो कहा कि क्या बात है मुझे हुदहुद नज़र नहीं आ रहा? क्या वह ग़ैर हाज़िर है?"

आयत 21

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ

"मैं उसे बहुत सख्त सज़ा दूँगा, या उसे ज़िबह कर डालूँगा"

इस इज्तमाई हाज़री (परेड) के मौक़े से ग़ैरहाज़िर होकर उसने बहुत बड़ा जुर्म किया है और उसे इस जुर्म की सज़ा ज़रूर भुगतना होगी।

اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ 21

"या वह मेरे पास कोई वाज़ेह दलील लेकर आए।"

हाँ अगर वह कोई ठोस उज़्र पेश करके अपनी इस ग़ैरहाज़री का जवाज़ साबित कर दे तो सज़ा से बच सकता है।

आयत 22

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ

"तो कुछ ज़्यादा देर नहीं गुज़री (कि हुदहुद पहुँच गया)"

فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ 22

"तो उसने कहा कि मैंने वह कुछ मालूम किया है जो आपको मालूम नहीं, और मैं

आपके पास क़ौमे सबा से मुताल्लिक़ यक़ीनी मालूमात लेकर आया हूँ।"

क़ौमे सबा यमन के इलाक़े में आबाद थी और उस वक़्त बिलक़ीस नामी एक मलिका उस क़ौम पर हुक्मरान थी।

आयत 23

اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

"मैंने एक औरत को उन पर हुकूमत करते हुए देखा है और उसे हर शय दी गई है"

दुनिया भर की नेअमतें उसे हासिल हैं और हर तरह का साज़ो-सामान उसके पास जमा है।

وَّ لَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ 23

"और उसका तख़्त बहुत अज़ीमुश्शान है।"

आयत 24

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

"और मैंने देखा उसको और उसकी क़ौम को कि वह सज्दा करते हैं सूरज को अल्लाह को छोड़ कर"

وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ

"और शैतान ने उनके लिये उनके आमाल को मुज़य्यन कर दिया है"

فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ 24

"और उन्हें रोक दिया है सीधे रास्ते से, तो अब वह रास्ता नहीं पा रहे।"

शैतान ने उन्हें गुमराह कर दिया है और अब उन्हें राहे हिदायत का शऊर नहीं रहा।

आयत 25

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ 25

"कि वह सज्दा नहीं करते अल्लाह को, जो निकालता है हर छुपी चीज़ को आसमानों और ज़मीन में से और वह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो।"

आयत 26

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۞26

"वह अल्लाह कि जिसके अलावा कोई मअबूद नहीं और जो बहुत बड़े अर्श का मालिक है।"

आयत 27

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ 27

"सुलेमान अलै. ने कहा: हम अनक़रीब देखेंगे कि तुमने सच कहा है या तुम झूठे हो।"

हम मालूम कर लेंगे कि वाक़ई तुम एक सच्ची ख़बर लेकर आए हो या अपनी ग़ैरहाज़री की सज़ा से बचने के लिये झूठा बहाना बना रहे हो।

आयत 28

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ 28

"मेरा ये ख़त ले जाओ, इसे उनके पास जाकर डाल आओ, फिर उनसे अलग होकर देखते रहो कि वह क्या जवाब देते हैं।"

चुनाँचे वह हुदहुद हज़रत सुलेमान अलै. का ख़त ले गया और जाकर मलिका के आस-पास या शायद उसकी ख्वाबगाह में फेंक दिया। मलिका ने ये ग़ैर मामूली ख़त पढ़ा तो फ़ौरी तौर पर क़ौम के बड़े-बड़े सरदारों को मशवरे के लिये दरबार में तलब कर लिया।

आयत 29

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ 29

"उसने कहा कि ऐ (मेरी क़ौम के) सरदारों! मेरी तरफ़ एक बहुत इज्ज़त वाला ख़त डाला गया है।"

आयत 30

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ 30

"ये (ख़त) सुलेमान की तरफ़ से है और इसका आग़ाज़ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से हुआ है।"

ये क़ुरान का वाहिद मक़ाम है जहाँ "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" सूरत के अन्दर इसके मतन में शामिल है। बाक़ी हर जगह ये सूरतों के आग़ाज़ में लिखी गई है। इसके बारे में इख्तिलाफ़ है कि सूरतों के आग़ाज़ में जहाँ-जहाँ भी बिस्मिल्लाह लिखी गई है क्या इसे एक आयत माना जाएगा या जितनी मर्तबा लिखी गई है इतनी आयात शुमार होंगी।

आयत 31

"ये कि मेरे मुक़ाबले में तुम लोग सरकशी ना करो और मुतीअ होकर मेरे पास हाज़िर हो जाओ।"

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝31

आयत 32

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۝32

"उसने कहा: ऐ सरदारों! मेरे इस मामले में आप लोग मुझे मशवरा दें। मैं किसी मामले में भी हतमी फ़ैसला नहीं करती जब तक आप लोग मौजूद ना हों।"

आयत 33

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ڏ

"उन्होंने कहा: हम ताक़तवर भी हैं और ज़बरदस्त जंगी सलाहियत वाले भी"

وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ۝33

"और फ़ैसले का इख्तियार तो आप ही के पास है, चुनाँचे आप खुद देख लें कि क्या हुक्म देती हैं।"

आयत 34

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا

"उसने कहा कि बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसमें फ़साद बरपा कर देते हैं"

इस नाज़ुक मौक़े पर मलिका ने बड़ी दानिशमंदाना बात की कि बादशाहों का हमेशा से ही दस्तूर रहा है कि वह जिस शहर या इलाक़े को फ़तह करते हैं उसे बरबाद करके रख देते हैं।

وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝34

"और उसके मौअज़्ज़ लोगों को ज़लील कर देते हैं, और वह ऐसे ही करते हैं।"

मलिका की ये बात भी बहुत अहम है और हक़ीक़त पर मब्नी है। अल्लामा इक़बाल ने अपनी नज़्म "खिज़र-ए-राह" के ज़ेली उन्वान "सल्तनत" के तहत जो फ़लसफ़ा बयान किया है उसका मरकज़ी ख़्याल उन्होंने इसी आयत से अखज़ किया है और पहले शेर में इस आयत से तल्मीह भी इस्तेमाल की है। नज़्म का आग़ाज़ यूँ होता है:

आ बताऊँ तुझको रमज़े आया-ए-इन्नल मुलुक
सल्तनत अक़वामे ग़ालिब की है एक जादूगरी
ख़्वाब से बेदार होता है ज़रा महकूम अगर
फिर सुला देती है उसको हुक्मराँ की साहिरी!

बर्रे अज़ीम पाक-ओ-हिन्द में मुसलमानों के साथ भी यही मामला हुआ। यहाँ मुसलमान हुक्मरान थे जबकि हिन्दू उनके महकूम थे। अंग्रेज़ों के इक़तदार पर क़ब्ज़ा करने से हिन्दुओं को तो कुछ ख़ास फ़र्क़ ना पड़ा, उनके तो सिर्फ़ हुक्मरान तब्दील हुए, पहले वह मुसलमानों के गुलाम थे, अब अंग्रेज़ों के गुलाम बन गए, लेकिन मुसलमान तो गोया आसमान से ज़मीन पर पटक दिये गए। वह हाकिम से महकूम बन गए। अब अगर अंग्रेज़ों को कुछ खतरा था तो मुसलमानों से था। उन्हें खदशा था कि मुसलमान अपना खोया हुआ इक़तदार दोबारा हासिल करने के लिये ज़रूर कोशिश करेंगे। चुनाँचे उन्होंने मुसलमानों की मुम्किना बग़ावत की पेशबंदी के लिये उन्हें हर तरह से दबाने की कोशिश की। इस सिलसिले में उन्होंने ये तरीक़ा अपनाया कि मआशरे के घटिया लोगों को तो खिताबात और जागीरों से नवाज़ कर आला मनासिब पर बैठा दिया और उनके मुक़ाबले में मौअज़जीन और शुरफ़ाअ को हर तरह से ज़लील व रुसवा किया। ऐसे तमाम जागीरदार अंग्रेज़ों का हक़-ए-नमक अदा करते हुए अपनी क़ौम के मफ़ादात के ख़िलाफ़ अपने आक़ाओं की मआवनत में हमेशा पेश-पेश रहते।

यही हिकमते अमली मिस्र में फ़िरऔन ने भी अपना रखी थी। उसने भी बनी इसराईल में से कुछ लोगों को अपने दरबार में जगह दे रखी थी। ये मराअत याफ्ता लोग फ़िरऔन की खुशनुदी हासिल करने के लिये अपनी क़ौम की मुखबरी करते और अपने ही भाई बन्दों के ख़िलाफ़ फ़िरऔन के मआवन व मददगार बनते। सूरह युनुस में इस सूरतेहाल को इस तरह बयान फ़रमाया गया है: { فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰي خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ } (आयत 83) "पस नहीं ईमान लाए मूसा पर मगर कुछ नौजवान उसकी क़ौम में से, फ़िरऔन और अपने सरदारों के खौफ़ की वजह से कि वह उन्हें किसी मुसीबत में मुब्तला ना कर दें।" गोया बनी इसराईल के आम लोगों पर अपने इन सरदारों का खौफ़ तारी था जो फ़िरऔन की वफ़ादारी में अपनी ही क़ौम पर ज़ुल्म व सितम रवा रखते थे।

आयत 35

وَاِنِّىْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ؀35

"तो मैं इनकी तरफ़ अपने ऐलची कुछ तहाएफ़ के साथ भेजती हूँ, फिर देखती हूँ कि वह क्या जवाब लेकर वापस आते हैं।"

हज़रत सुलेमान अलै. की ख़िदमत में क़ीमती तहाएफ़ (तोहफें) भेज कर वह मालूम करना चाहती थी कि आया दुनियवी मालो-दौलत का हसूल ही इनका मक़सद व मदआ है या इससे आगे बढ़ कर वह कुछ और चाहते हैं।

आयत 36

فَلَمَّا جَاۗءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۡفَمَآ اٰتٰىنِۦ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ

"तो जब वह (वफ़द) आया सुलेमान के पास, उसने कहा कि क्या तुम मेरी इआनत करना चाहते हो माल व दौलत से? तो जो कुछ मुझे अल्लाह ने दे रखा है वह कहीं बेहतर है उससे जो उसने तुम्हें दिया है।"

بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ 36

"अपने इन तहाएफ़ से तुम खुद ही खुश रहो।"

आयत 37

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ 37

"तुम लौट जाओ उनकी तरफ़, तो हम उन पर ऐसे लश्करों से हमलावर होंगे जिनका मुक़ाबला उनके लिये मुमकिन नहीं होगा, और हम निकाल बाहर करेंगे उन्हें इस मुल्क से ज़लील करके और वह ख्वार हो जायेंगे।"

यानि उन्हें या तो हमारी पहली बात मानना पड़ेगी कि वह मुस्लिम (मुतीअ) होकर हमारे पास हाज़िर हो जाएँ, वरना हम उन पर लश्करकशी करेंगे।

आयत 38

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ 38

"(फिर अपने दरबारियों से मुखातिब होकर) सुलेमान ने कहा: ऐ दरबारियों! तुम में से कौन उस (मलिका) का तख़्त मेरे पास लाएगा इससे पहले कि वह लोग फ़रमांबरदार होकर मेरे पास पहुँचें?"

यानि आपको यक़ीन था कि मलिका-ए-सबा इज़हारे इताअत के लिये ज़रूर हाज़िर होगी। चुनाँचे आपने चाहा कि उसके आने से पहले उसका तख़्त यहाँ पहुँच जाए और उसमें थोड़ी बहुत तब्दीली करके उसकी आज़माइश की जाए कि वह अपने तख़्त को पहचान पाती है या नहीं।

आयत 39

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ 39

"जिन्नों में से एक देव ने कहा कि मैं उसे आपके पास ले आता हूँ इससे पहले कि आप अपनी इस मजलिस से उठें, और मैं यक़ीनन इस काम के लिये ताक़त भी रखता हूँ और अमानतदार भी हूँ।"

जिस तरह इंसानों में कोई कमज़ोर होता है और कोई ताक़तवर, इसी तरह जिन्नों में भी छोटे-बड़े जिन्न होते हैं। चुनाँचे एक ताक़तवर क़वी हेकल देव ने दावा किया कि आपके दरबार बर्ख़ास्त करने से पहले मैं वह तख़्त लाकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर किये देता हूँ।

आयत 40

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ

"कहने लगा वह शख्स जिसके पास किताब का इल्म था कि मैं इसे आपके पास ले आता हूँ इससे क़ब्ल कि आपकी निगाह पलट कर आपकी तरफ़ आए।"

यानि मैं आपके पलक झपकने से पहले इसको हाज़िर किये देता हूँ। ये जिस शख्स का ज़िक्र है इसके बारे में मुफ़स्सरीन कहते हैं कि वह हज़रत सुलेमान अलै. के वज़ीर आसिफ़ बिन बरखयाह थे, और ये कि इनके पास कुतुबे समाविया और अल्लाह तआला के नामों से मुताल्लिक़ एक ख़ास इल्म था जिसकी तासीर से इन्होंने इस काम को मुमकिन कर दिखाया। हमारे पास इन मौज़ू पर ना तो कोई मरफ़ूअ हदीस है और ना ही इन अस्मा-ए-इलाहिया में ऐसी कोई तासीर साबित होती है जो हमें हुज़ूर ﷺ की तरफ़ से बताए गए हैं। लिहाज़ा हमारा ईमान है कि कुरान में ये वाक़िया जिस तरह मज़कूर है बिल्कुल वैसे ही वक़ूअ पज़ीर हुआ होगा। लेकिन साथ ही हम यह भी समझते हैं कि अगर इसकी तफ़सीलात में दिलचस्पी लेना हमारे लिए मुफ़ीद होता तो हुज़ूर ﷺ लाज़िमन वज़ाहत फ़रमा देते कि इस शख्सियत के पास किस किताब का कौन सा इल्म था। और अगर आपकी तरफ़ से ऐसी कुछ हिदायात नहीं दी गईं तो इसका मतलब यही है कि हमें इस बारे में मज़ीद किसी ख़ोज कुरेद में नहीं पड़ना चाहिये। चुनाँचे इस ऐतबार से ये आयत मुताशाबेहात में से है।

अलबत्ता عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ के अल्फ़ाज़ में साइंसी और टेक्निकल इल्म की तरफ़ भी इशारा मौजूद है। हो सकता है उन्हें कोई ऐसी तरकीब मालूम हो जिसके ज़रिये से साइंसी तौर पर ऐसा करना मुमकिन हुआ हो। बहरहाल साइंसी नुक़्ता नज़र से ऐसा होना कोई नामुमकिन बात भी नहीं है। आज साइंस जिस अंदाज़ और जिस रफ्तार से तरक्क़ी कर रही है इसके नतीजे में मुम्किन है बहुत जल्द ऐसी टेक्नोलॉजी हासिल कर ली जाए जिसके ज़रिये से किसी माद्दी चीज़ को atoms में तहलील करना और फिर इन atoms को चश्मे ज़दन में दूसरी जगह मुन्तक़िल करके उनसे इस चीज़ को इसी हालत में दोबारा ठोस शक्ल दे देना मुमकिन हो जाए।

فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ

"फिर जब उसने देखा उसे अपने सामने रखा हुआ"

यानि वह साहब अपने दावे के मुताबिक़ उस तख़्त को वाक़ई पलक झपकने से पहले ले आए और जब हज़रत सुलेमान अलै. ने उसे अपने सामने देखा तो बे-इख़्तियार आप अल्लाह की हम्दो-सना करने लगे।

قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۗ

"उसने कहा कि यह मेरे रब ही के फ़ज़्ल से है"

कोई दुनियादार बादशाह होता तो अपने वज़ीर के कमाल को भी अपना ही कमाल क़रार देता, लेकिन हज़रत सुलेमान अलै. ने इसे अल्लाह का फ़ज़्ल क़रार दिया और उसका शुक्र अदा किया। बंदगी का कामिल नमूना भी यही है कि इंसान बडी से बड़ी कामयाबी को अपना कमाल समझने के बजाय अल्लाह तआला का ईनाम जाने और इस पर उसका शुक्र अदा करे।

"ताकि वह मुझे आज़माए कि क्या मैं शुक्र अदा करता हूँ या नाशुकरी करता हूँ।" لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۭ

"और जो कोई शुक्र करता है वह अपने ही (भले के) लिये करता है।" وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ

"और जो कोई नाशुक्री करता है तो मेरा रब यक़ीनन बेनियाज़ है, बहुत करम करने वाला।" وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ 40

आयत 41

"सुलेमान अलै. ने कहा कि उसके लिये उसके तख़्त की हैइयत ज़रा बदल दो" قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا

कि मलिका को आज़माने के लिये तख़्त की ज़ाहिरी हैइयत में थोड़ी बहुत तब्दीली कर दो।

"हम देखें कि वह पहचान पाती है या उन लोगों में से होती है जो नहीं पहचान पाते।" نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ 41

आयत 42

"फिर जब वह आई तो (उससे) कहा गया कि क्या इसी तरह का है आपका तख़्त? उसने कहा ये तो गोया वही है!" فَلَمَّا جَاۗءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ

चुनाँचे उसने अपने तख़्त को पहचान लिया। यानि वह वाक़ई एक ज़हीन और समझदार औरत थी। इससे पहले आयत 34 में फ़ातेह बादशाहों के बारे में उसका तबसरा भी उसकी ज़हानत और दानिशमंदी का सबूत है।

"और हमें इससे पहले ही इल्म हासिल हो चुका है और हम इस्लाम ला चुके हैं।" وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ 42

यानि मेरे तख़्त का यहाँ पहुँच जाना अब मेरे लिये कोई बहुत बड़ी हैरत की बात नहीं। आपका अल्लाह के यहाँ जो मक़ाम व मर्तबा है इसके बारे में मुझे बहुत पहले ही इल्म हो चुका है और इसी वजह से हम मुसलमान होकर आप की इताअत क़ुबूल कर चुके हैं।

आयत 43

"और सुलेमान अलै. ने उसे रोके दिया (उससे) जिसको वह पूजती थी अल्लाह के सिवा।" وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ

اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ 43

“वह एक काफ़िर क़ौम में से थी।”

आयत 44

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ

“उससे कहा गया कि अब महल में दाख़िल हो जाओ!”

فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۭ

“तो जब उसने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं।”

قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ڛ

“सुलेमान ने कहा: ये तो ऐसा महल है जो मरसीय है शीशों से।”

यानि वह शीशे का चिकना फ़र्श था और मलिका ने जब उसमें अपना अक्स देखा तो उसे पानी समझ कर पिंडलियों से कपड़ा उपर उठा लिया कि शायद आगे जाने के लिये इस पानी से होकर गुज़रना है। बहरहाल हज़रत सुलेमान अलै. ने उसे असल हक़ीक़त से आगाह किया। इससे दरअसल उसे अहसास दिलाना मक़सूद था कि जो नेअमतें अल्लाह तआला ने हमें दे रखी हैं, वह तुम्हारे हाशिया-ए-ख्याल में भी नहीं हैं।

قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ 44

“उसने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! यक़ीनन मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और अब मैंने सुलेमान अलै. के साथ अल्लाह की इताअत इख़्तियार की है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।”

हज़रत सुलेमान अलै. का वाक़िया यहाँ पर इख्तताम पज़ीर हुआ। सूरत का ये हिस्सा क़ससुन्नबिय्यीन के अंदाज़ में है। इसके बाद हज़रत सालेह और हज़रत लूत अलै. के वाक़िआत में अम्बिया अर्रुसुल का अंदाज़ पाया जाता है।

आयात 45 से 58 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ 45 قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا
تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ 46 قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ قَالَ طٰۗىِٕرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ 47 وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ
تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ 48 قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ
49 وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ 50 فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ 51 فَتِلْكَ
بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ 52 وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ 53 وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ
وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ 54 اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ 55 فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ 56 فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ 57 وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ
فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ 58

आयत 45

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ 45

“और हमने भेजा था क़ौमे समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह अलै. को कि तुम अल्लाह

की बंदगी करो, तो इस पर वह लोग दो गिरोह बन कर आपस में झगड़ने लगे।"

आयत 46

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ

"उसने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगों! तुम क्यों जल्दी मचाते हो बुराई के लिये, भलाई से पहले?"

तुम लोग अल्लाह से खैर माँगने के बजाय अज़ाब माँगने में क्यों जल्दी मचा रहे हो? सूरतुल आराफ़ (आयत 77) में इनका ये क़ौल नक़ल हो चुका है: {يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ} "ऐ सालेह! ले आओ हम पर वह अज़ाब जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो अगर तुम वाक़ई रसूलों में से हो!"

لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ 46

"तुम लोग अल्लाह से मगफ़िरत क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए!"

आयत 47

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ

"उन्होंने कहा कि हम मनहूस समझते हैं तुमको और तुम्हारे साथियों को।"

हमें खदशा है कि आप लोगों की नहूसत की वजह से हम किसी आफ़त में गिरफ्तार ना हो जाएँ।

قَالَ طٰۗىِٕرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ 47

"उसने कहा कि तुम्हारी नहूसत का मामला अल्लाह के इख़्तियार में है, बल्कि तुम ऐसे लोग हो जो आज़माए जा रहे हो।"

आयत 48

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ 48

"और उस शहर में नौ (9) बड़े-बड़े सरदार थे, वह ज़मीन में फ़साद मचाते थे और इस्लाह नहीं करते थे।"

आयत 49

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ

"उन्होंने कहा कि तुम सब आपस में अल्लाह की क़सम खाकर अहद करो कि हम लाज़िमन रात को हमला करेंगे इस पर और इसके घर वालों पर"

इन सब सरदारों ने मिल कर हज़रत सालेह अलै. को क़त्ल करने की साज़िश की। इनमें से कोई अकेला ये इक़दाम करके हज़रत सालेह अलै. के क़बीले

के साथ दुश्मनी मोल नहीं ले सकता था, इसलिये इन्होंने हलफ़ उठवा कर सबको इस पर आमादा किया। सबको इस तरह इस मुहिम में शामिल करने का एक मक़सद ये भी था कि इनमें से कोई शख्स राज़ फ़ाश ना कर सके। क़बाइली रिवायात व क़वानीन के तहत पूरा क़बीला ब-हैसियत मज्मुई अपने तमाम अफ़राद के जान व माल के तहफ्फुज का ज़िम्मेदार होता है और अपने किसी फ़र्द को कोई गज़न्द पहुँचने की सूरत में पूरा क़बीला यक जान होकर उसके बदले का अहतमाम करता है। सूरह हूद (आयत 91) में हम पढ़ आए हैं कि हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग भी आपके ख़िलाफ़ ऐसा ही इक़दाम करना चाहते थे लेकिन आपके क़बीले के डर की वजह से वह ऐसा ना कर सके। अपनी इस मजबूरी का इक़रार उन्होंने इन अल्फ़ाज़ में किया था: {وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ} "और अगर तुम्हारा क़बीला ना होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते।"

खुद मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के ख़िलाफ़ भी मक्के में एक वक़्त ऐसा आया कि सब मुशरिकीन आपके क़त्ल के दर पे हो गए, मगर अपनी इस ख्वाहिश को अमली जामा पहनाते हुए डरते थे कि उनका ये इक़दाम उनके क़बाइल के दरमियान कहीं खाना जंगी का बाइस ना बन जाए। चुनाँचे उन्होंने भी बैय्नही वही मंसूबा बनाया जो हज़रत सालेह अलै. की क़ौम के सरदारों ने बनाया था कि हर क़बीले से एक-एक नौजवान इस अमल में शरीक हो और सब मिल कर आप पर हमला करें। इस तरह ना तो ये पता चल सकेगा कि असल क़ातिल कौन है और ना ही बनु हाशिम सब क़बाइल से बदला लेने की जुर्रत कर सकेंगे।

बहरहाल हज़रत सालेह अलै. की क़ौम के इन नौ सरदारों ने बाहम हलफ़ उठा कर मंसूबा बनाया कि वह सब मिल कर रात को आपके घर पर धावा बोल देंगे और:

ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ؁49

"फिर हम उसके वारिस से कह देंगे कि हम तो इसके घरवालों के क़त्ल के वक़्त मौजूद ही नहीं थे और हम बिल्कुल सच्चे हैं।"

आयत 50

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ؁50

"और उन्होंने एक चाल चली और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें पता भी ना चला।"

आयत 51

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ؁51

"तो देख लो क्या अंजाम हुआ उनकी चाल का, हमने उन्हें और उनकी पूरी क़ौम को हलाक कर डाला।"

यानि इस क़ौम पर अज़ाबे इलाही टूट पड़ा और इन नौ सरदारों समेत तमाम मुन्करीन हलाक हो गए।

आयत 52

"तो ये उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं, उस ज़ुल्म के सबब जो उन्होंने किया।"

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوْا ۭ

"यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं।"

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ؁52

आयत 53

"और हमने निजात दी उन लोगों को जो ईमान लाए थे और जिन्होंने तक़वे की रविश इख़्तियार की थी।"

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ؁53

आयत 54

"और लूत अलै. को भी (हमने भेजा) जब उसने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम फ़हश काम करते हो और तुम देखते भी हो!"

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ؁54

इससे मालूम होता है कि वह लोग अलल ऐलान अपनी मजालिस के अन्दर ऐसी फ़हश हरकात का इरत्काब करते थे।

आयत 55

"क्या तुम मर्दों का रुख करते हो शहवत रानी के लिये औरतों को छोड़ कर! बल्कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो।"

اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْـهَلُوْنَ ؀55

आयत 56

"तो उसकी क़ौम का कोई जवाब नहीं था मगर ये कि उन्होंने कहा: निकाल बाहर करो लूत के घरवालों को अपने शहर से। ये लोग बड़े पाक-बाज़ बनते हैं!"

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ؁56

आयत 57

"तो हमने निजात दी उसको और उसके घर वालों को सिवाय उसकी बीवी के, जिसके बारे में हमने तय कर दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।"

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ؀57

आयत 58

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝58

"और उनके ऊपर हमने एक बारिश बरसाई, तो बहुत ही बुरी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसाई गई जिनको ख़बरदार कर दिया गया था।"

यहाँ पर इस सूरत का अम्बिया अर्रुसुल का हिस्सा भी इख्तताम पज़ीर हुआ। अब इसके बाद कुछ हिस्सा अत्तज़कीर बि आला अल्लाह पर मुश्तमिल है और ये इस सूरत का बिल्कुल मुनफ़रिद अंदाज़ है।

आयात 59 से 64 तक

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰي عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ اٰۗللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝59 اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا
بِهٖ حَدَاۗىِٕقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝60 اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ
اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝61 اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ
السُّوْۗءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاۗءَ الْاَرْضِ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝62 اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهٖ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝63 اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝64

आयत 59

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰي عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ

"आप कह दीजिये कि कुल हम्द और कुल शुक्र अल्लाह के लिये है, और सलाम है उसके उन बन्दों पर जिनको उसने चुन लिया है।"

यानि तमाम अम्बिया व रुसुल अलै. अल्लाह के चुने हुए लोग थे, जैसा कि सूरह आले इमरान की आयत नम्बर 33 में भी फ़रमाया गया है: {اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓي اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ}

اٰۗللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝59

"क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिनको ये शरीक बनाते हैं!"

ज़रा सोचो कि अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे इन मअबूदों की क्या हैसियत है? तुम लोग खुद तस्लीम करते हो कि तमाम इख्तियारात का मालिक अल्लाह ही है। तो फिर इन बे-इख़्तियार मअबूदों को तुम किस हैसियत से पूजते हो?

आयत 60

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ

"भला कौन है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और आसमान से तुम्हारे लिये पानी उतारा!"

فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَاۗىِٕقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ

"फिर इसके ज़रिये से हमने पुर रौनक़ बागात उगाये।"

مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَـرَهَا ۭ

"तुम्हारे लिये मुमकिन नहीं था कि इनके दरख्तों को खुद उगा सकते।"

मुतजस्साना सवालात (searching questions) का ये अंदाज़ बहुत मौअस्सर है। अल्लामा इक़बाल ने अपने इन अशआर में यही मज़मून बिल्कुल इसी अंदाज़ में पेश किया है:

पालता है बीज को मिट्टी की तारीकी में कौन
कौन दरियाओं की मौजों से उठाता है सहाब?
कौन लाया खींच कर पश्चिम से बादे साज़गार
खाक ये किसकी है? किसका है ये नूरे आफ़ताब?

कि अल्लाह ही हवाओं को चलाता है, बारिश बरसाता है, मौसमों को साज़गार बनाता है, अनाज उगाता है, गर्ज़ तमाम अमूर उसी के हुक्म और उसी की कुदरत से अंजाम पाते हैं। अल्लाह की कुदरत कामिला के बयान का यही अंदाज़ सूरतुल वाक़िया में भी मिलता है।

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ

"क्या कोई और मअबूद भी है अल्लाह के साथ?"

क्या इन सारे कामों में अल्लाह के साथ कोई और इलाह भी शरीक है?

بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۭ 60

"बल्कि ये ऐसे लोग हैं जो (हक़ से) इन्हराफ़ कर रहे हैं।"

आयत 61

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۭ ءَ

"भला किसने बनाया ज़मीन को ठहरने की जगह और रवां कर दिये इसके अंदर दरिया (और नदियाँ), और बनाए इसके लिये लंगर (पहाड़) और बनाया दो दरियाओं के दरमियान पर्दा?"

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ

"क्या कोई और मअबूद भी है अल्लाह के साथ?"

क्या कोई ऐसी दूसरी हस्ती तुम्हारी नज़र में है जो इन कामों में अल्लाह के साथ शरीक हो?"

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۭ 61

"बल्कि इनकी अक्सरियत इल्म नहीं रखती।"

तावीले ख़ास के ऐतबार से इन आयात के मुखातबीने अव्वलीन मुशरिकीने मक्का थे और इनके पास इन पे-दर-पे सवालात का एक ही जवाब था, और

वह ये कि अल्लाह के सिवा कोई और मअबूद नहीं है! इस हवाले से उनके ख़्यालात, नज़रियात और अक़ाइद के बारे में जानना ज़रूरी है और ये जानना भी ज़रूरी है कि इनके शिर्क की सूरत और नौइयत क्या थी? चुनाँचे इस सिलसिले में ये बात बहुत अहम है कि मुशरिकीने मक्का अल्लाह को मअबूद भी मानते थे और उसको इस कायनात का खालिक़ भी तस्लीम करते थे। अलबत्ता कुछ शख्सियात (जिनके बुत उन्होंने बना रखे थे) के बारे में उनका अक़ीदा था कि वह अल्लाह के लाड़ले, चहेते और मुक़र्रबीन हैं और वह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे: {وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَاۗءِ شُفَعَاۗؤُنَا عِنْدَاللّٰهِ} (युनुस 18)। बस उनका शिर्क इससे ज़्यादा कुछ नहीं था।

आयत 62

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْۗءَ

"भला कौन है जो सुनता है एक मजबूर व लाचार को जब वह उसको पुकारता है और (उसकी) तकलीफ़ को दूर करता है?"

وَيَجْعَلُكُمْ خُلَـفَاۗءَ الْاَرْضِ ۭ

"और जो तुम्हें जानशीन बनाता है ज़मीन में?"

कि तुम्हारी एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल उसकी जानशीन बनती है और ये सिलसिला ग़ैर मुन्क़तअ तरीक़े से अल्लाह तआला क़ायम रखे हुए है।

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ۭ62

"क्या कोई और मअबूद भी है अल्लाह के साथ (इन कामों में शरीक)? बहुत ही कम नसीहत है जो तुम लोग हासिल करते हो।"

आयत 63

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ

"भला कौन है जो तुम्हें रास्ता दिखाता है ख़ुश्की और समुन्दर के अंधेरों में? और कौन भेजता है हवाओं को बशारत देती हुई अपने बाराने रहमत के आगे-आगे?"

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ۭ63

"क्या कोई और मअबूद भी है अल्लाह के साथ? बहुत बुलंद व बाला है अल्लाह उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं।"

ठंडी हवा के झोंके जो बादलों के आगे-आगे बाराने रहमत की नवीद (खुश खबरी) बन कर चलते हैं, क्या इन्हें चलाने और बहर-ओ-बर की तारीकियों में तुम लोगों को दुरुस्त रास्ते सुझाने में अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअबूद का भी कोई हिस्सा है?

आयत 64

اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ

"भला कौन है जो इब्तदा में पैदा करता है मख्लूक़ को, फिर उसका इआदाह करता है? और कौन है जो तुम लोगों को रिज़्क़ देता है आसमानों और ज़मीन से?"

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ 64

"क्या कोई और मअबूद भी है अल्लाह के साथ? आप कहिये कि लाओ अपनी दलील, अगर तुम सच्चे हो?"

आयात 65 से 81 तक

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ 65 بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۣ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا
ۣ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ 66 وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۗؤُنَآ اَىِٕنَّا لَمُخْرَجُوْنَ 67 لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ 68 قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ 69 وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا
يَمْكُرُوْنَ 70 وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ 71 قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ 72 وَاِنَّ
رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَي النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ 73 وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ 74 وَمَا مِنْ غَاۗىِٕبَةٍ فِي السَّمَاۗءِ
وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ 75 اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ 76 وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
77 اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ 78 فَتَوَكَّلْ عَلَي اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَي الْحَقِّ الْمُبِيْنِ 79 اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى
وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ 80 وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ 81

आयत 65

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۭ

"आप कह दीजिये कि जो कोई भी आसमानों और ज़मीन में है, किसी को भी गैब का इल्म नहीं सिवाय अल्लाह के।"

وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ 65

"और इन्हें तो ये भी मालूम नहीं कि इन्हें कब उठाया जाएगा।"

यानि वह लोग जो फ़ौत हो चुके हैं, चाहे वह औलिया अल्लाह हों या कोई और, इस दुनिया से जाने के बाद वह आलमे बरज़ख़ में हैं और वहाँ उन्हें कुछ मालूम नहीं कि उन्हें कब दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाएगा।

आयत 66

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۣ

"बल्कि थक-हार कर रह गया है इनका इल्म आख़िरत के बारे में।"

यानि ये लोग आख़िरत की हक़ीक़त को समझ नहीं पा रहे।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۣ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ 66

"बल्कि इसके बारे में वह शक में मुब्तला हैं, बल्कि इसकी तरफ़ से वह अंधे हो चुके हैं।"

अगरचे ये लोग ज़बानी तौर पर आख़िरत का इक़रार भी करते हैं और दोबारा जी उठने पर बज़ाहिर ईमान भी रखते हैं, लेकिन अमलन वह इसके मुन्कर

हैं। अमलन इन्हें आख़िरत की ज़िंदगी को सँवारने या क़यामत के अहतसाब से बचने की कोई फ़िक्र नहीं है। इस दुनिया में अपने कल की फ़िक्र इंसान को हर वक़्त दामनगीर रहती है, कि कल क्या खाना है और बाक़ी ज़रूरियात कैसे पूरी करनी हैं। इसलिये कि इसे कल के आने पर पुख्ता यक़ीन होता है। इसी तरह अगर इसे वाक़ई यक़ीन हो कि मरने के बाद इसे दोबारा ज़िन्दा होना है और ये कि आख़िरत की ज़िंदगी ही असल ज़िंदगी है तो इसके लिये वह लाज़िमन फिक्रमंद भी होगा और इसे बेहतर बनाने की कोशिश भी करेगा। लेकिन किसी इंसान को अमलन अगर इसकी फ़िक्र नहीं है और वह इसके लिये कोशिश भी नहीं कर रहा तो इसका साफ़ मतलब ये है कि इसे उसके बारे में यक़ीन नहीं है।

आयत 67

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۗؤُنَآ اَىِٕنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ۝67

"और ये काफ़िर कहते हैं कि क्या जब हम और हमारे आबा व अजदाद मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हमें फिर से निकाल लिया जाएगा?"

आयत 68

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ

"यही वादा हमसे भी किया गया है और इससे पहले हमारे आबा व अजदाद से भी किया गया था।"

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝68

"ये कुछ नहीं मगर पहले लोगों की कहानियाँ हैं।"

आयत 69

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝69

"आप कहिये कि ज़रा घूमो-फिरो ज़मीन में और देख लो कि कैसा अंजाम हुआ मुजरिम क़ौमों का!"

आयत 70

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝70

"(ऐ नबी ﷺ!) आप इन पर रंजीदा ना हों, और जो चालें ये चल रहे हैं उन पर दिल तंग ना करें।"

मक्के के माहौल में चूँकि रसूल अल्लाह ﷺ को शदीद मुखालफ़त और दबाव का सामना था, इसलिये मक्की सूरतों में ये मज़मून बार-बार दोहराया गया है। सूरह नहल की आयत 127 में ये मज़मून बिल्कुल इन्ही अल्फ़ाज़ में आया है, जबकि सूरह शु'अरा में इस हवाले से हुज़ूर ﷺ को मुखातिब करके यूँ फ़रमाया गया है: { لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ} (आयत 3) "(ऐ नबी ﷺ!) शायद आप हलाक कर देंगे अपने आप को इसलिये कि ये लोग ईमान नहीं ला रहे।" बहरहाल मुशरिकीन मक्का के मुखालफ़ाना रवैय्ये के बाइस हुज़ूर ﷺ को बार-बार तसल्ली दी जाती थी कि आपने इन तक हमारा पैग़ाम पहुँचा कर इन पर हुज्जत क़ायम कर दी है और यूँ आपने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है। अब आप इनकी परवाह ना करें और ना ही इनके बारे में रंजीदा हों। ये लोग अज़ाब के मुस्तहिक़ हो चुके हैं। हमारी तदाबीर इनकी चालों का इहाता किये हुए हैं। हमारी क़ुदरत के सामने इनकी साज़िशें कामयाब नहीं हो सकेंगी।

आयत 71

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝71

"और वह कहते हैं कि ये वादा कब पूरा होगा, अगर आप सच्चे हैं?"

यानि आप हमें मुसलसल धमकियाँ दिये जा रहे हैं कि अगर हम आपकी इताअत नहीं करेंगे तो हम पर अज़ाब आ जाएगा। चुनाँचे अगर आप अपने इस दावे में सच्चे हैं तो ज़रा ये भी बता दें कि वह अज़ाब कब आएगा?

आयत 72

قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝72

"आप कह दीजिये कि हो सकता है जिस चीज़ की तुम लोग जल्दी मचा रहे हो उसका कुछ हिस्सा तुम्हारे क़रीब ही आ लगा हो।"

"رَدِفَ" के मायने घोड़े पर दूसरी सवारी के तौर पर सवार होने के हैं। इस तरह पिछला सवार अपने आगे वाले की पीठ के साथ जुड़ कर बैठने की वजह से "रदीफ़" कहलाता है। इस ऐतबार से आयत का मफ़हूम ये है कि तुम जिस अज़ाब के बारे में बेसब्री से बार-बार पूछ रहे हो वह अब तुम्हारी पीठ के साथ आ लगा है, बस अब तुम्हारी शामत आने ही वाली है। इन अल्फ़ाज़ में गालिबन गज़वा-ए-बद्र की तरफ़ इशारा है जिसमें मुशरिकीने मक्का को अज़ाबे इलाही की पहली क़िस्त मिलने वाली थी।

आयत 73

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَي النَّاسِ

"और यक़ीनन आपका रब बड़े फ़ज़ल वाला है लोगों के हक़ में"

यानि अभी तक अगर तुम लोगों पर अज़ाब नहीं आया तो ये अल्लाह तआला की मेहरबानी का मज़हर है। इसलिये कि वह लोगों के साथ बहुत फ़ज़ल और करम का मामला करता है।

"लेकिन इनकी अक्सरियत शुक्र नहीं करती।"

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ؀73

आयत 74

"और यक़ीनन आपका रब ख़ूब जानता है जो कुछ छुपाते हैं इनके सीने और जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं।"

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؀74

अल्लाह तआला को ख़ूब मालूम है कि वह अपनी ज़बानों से क्या कहते हैं और उनके दिलों में क्या जज़्बात हैं। उनके दिल तो गवाही दे चुके थे कि मोहम्मद (ﷺ) सच्चे हैं और क़ुरान भी बरहक़ है, लेकिन वह महज़ हसद, तकब्बुर और तअस्सुब के बाइस इन्कार पर अड़े हुए थे। इस हवाले से उनकी कैफ़ियत फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन की कैफ़ियत से मुशाबेह थी जिसका हाल इसी सूरत में इस तरह बयान हुआ है: { وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا } (आयत 14) "और उन्होंने इन (आयाते इलाही) का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर के साथ जबकि उनके दिलों ने इनका यक़ीन कर लिया था।" सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 146 और सूरतुल अनआम की आयत नम्बर 20 में उलमा-ए-अहले किताब की बिल्कुल यही कैफ़ियत इन अल्फ़ाज़ में बयान की गई है: {اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ} यानि वह अल्लाह के रसूल ﷺ और क़ुरान को ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं।

आयत 75

"और नहीं है कोई पोशीदा चीज़ आसमान और ज़मीन में मगर वह एक रौशन किताब में मौजूद है।"

وَمَا مِنْ غَاۗىِٕبَةٍ فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ؀75

गोया अल्लाह तआला के इल्म क़दीम ही को यहाँ किताबे मुबीन कहा गया है।

आयत 76

"यक़ीनन ये क़ुरान खोल कर बयान कर रहा है बनी इस्राईल पर अक्सर वह बातें जिनमें वह इख़्तलाफ़ करते हैं।"

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؀76

तौरात का नुज़ूल क़ुरान से दो हज़ार साल पहले हुआ था। असल किताब मुद्दतों पहले गुम हो चुकी थी, फिर एक अरसे बाद उसे याददाश्तों की मदद से दोबारा मुरत्तब किया गया और बनी इस्राईल ने अपनी मनपसंद रिवायात के ज़रिये से बहुत सी गलत बातें अल्लाह से मंसूब कर दीं। जैसे इक़बाल ने कहा है: *"ये उम्मत रिवायात में खो गई!"* बहरहाल क़ुरान ने हर चीज़ को खोल कर बयान कर दिया और हक़ीक़त हर पहलु से मुन्कशिफ़ हो गई।

आयत 77

وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ـــ77

"और यक़ीनन ये (क़ुरान) हिदायत और रहमत है अहले ईमान के हक़ में।"

आयत 78

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ـــ78ۃ

"यक़ीनन आपका रब फ़ैसला कर देगा इनके दरमियान अपने हुक्म से। और वह ज़बरदस्त है, सब कुछ जानने वाला।"

आयत 79

فَتَوَكَّلْ عَلَي اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَي الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ـــ79

"तो (ऐ नबी ﷺ!) आप तवक्कुल कीजिये अल्लाह पर। यक़ीनन आप ही वाज़ेह हक़ पर हैं।"

आपकी दावत में किसी क़िस्म का कोई शक व शुबह नहीं। आपका मौक़फ़ हक़ व सदाक़त पर मब्नी है।

आयत 80

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى

"अलबत्ता आप मुर्दों को नहीं सुना सकते"

यानि आपके इन मुखातबीन में से अक्सर लोगों के दिल मुर्दा हैं, इनकी रूहें इनके दिलों के अंदर दफ़न हो चुकी हैं। ये लोग सिर्फ़ हैवानी तौर पर ज़िन्दा हैं जबकि रूहानी तौर पर इनमें ज़िन्दगी की कोई रमक़ मौजूद नहीं है। चुनाँचे अबु जहल और अबु लहब को आप ज़िन्दा मत समझें, ये तो महज़ चलती फिरती लाशें हैं। इस कैफ़ियत में वह आपकी इन बातों को कैसे सुन सकते हैं! मीर दर्द ने अपने इस शेर में इंसान की इसी रूहानी ज़िंदगी का ज़िक्र किया है:

मुझे ये डर है दिले ज़िन्दा तू ना मर जाए
कि ज़िन्दगानी इबारत है तेरे जीने से!

وَلَاتُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ـــ80

"और ना आप बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं जबकि वह पीठ फेर कर चल पड़ें।"

यानि एक बहरा शख्स आपके रू-ब-रू हो, आपकी तरफ़ मुतवज्जा हो तो फिर भी इम्कान है कि इशारे किनाए से अपनी कोई बात उसे समझाने में कामयाब हो जायें, लेकिन जब वह पलट कर दूसरी तरफ़ चल पड़े तो उसे कोई बात समझाना या सुनाना मुम्किन नहीं रहता।

आयत 81

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ

"और ना ही आप अंधों को उनकी गुमराही से फेर कर राह पर लाने वाले बन सकते हैं।"

اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ؀81

"आप नहीं सुना सकते मगर सिर्फ़ उन्हीं को जो हमारी आयात पर ईमान रखते हैं और वह फ़रमाबरदारी की रविश इख़्तियार करते हैं।"

आयात 82 से 93 तक

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَاۗبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ؀82 وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ
بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ؀83 حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؀84 وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ
لَا يَنْطِقُوْنَ ؀85 اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ؀86 وَ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ؀87 وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۭ صُنْعَ اللّٰهِ
الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۭ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ؀88 مَنْ جَاۗءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَىِٕذٍ اٰمِنُوْنَ ؀89 وَمَنْ جَاۗءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۭ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؀90 اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ
اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ؀91 وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ؀92 وَقُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ؀93

आयात 82

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَاۗبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ

"और जब इन पर हमारी बात वाक़ेअ हो जाएगी तो हम निकालेंगे इनके लिये ज़मीन से एक जानवर जो इनसे कलाम करेगा"

اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ؀82

"कि लोग हमारी निशानियों पर यक़ीन नहीं रखते थे।"

"दाब्बतुल अर्द" का ज़हूर क़यामत की आख़री अलामत में से है। अहादीस के मुताबिक़ सूरज के मगरिब से तुलुअ होने के बाद कोहे सफ़ा फटेगा और उसमें से ये जानवर बरामद होगा। वल्लाहु आलम!

आयात 83

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ؀83

"और ज़रा तसव्वुर करो उस दिन का जिस दिन हम जमा करेंगे हर उम्मत में से एक फ़ौज उन लोगों में से जो हमारी आयात को झुठलाया करते थे, फिर उनकी दर्जाबंदी की जाएगी।"

गोया इन मुजरिमों के जराइम मुख्तलिफ़ दर्जों में होंगे। इनमें से कोई इन्कार में बहुत ज़्यादा सख्त था, किसी की तबीयत में कुछ नर्मी का पहलु था, कोई तकज़ीब के साथ-साथ इस्तहज़ाअ करने का मुजरिम भी था।

चुनाँचे इनके जराइम की नौइयत और कैफ़ियत के मुताबिक़ इनकी गिरोहबंदी की जाएगी। ये तरीक़ा इंसानी फ़ितरत और तबीयत के ऐन मुताबिक़ होगा क्योंकि सब इंसान बराबर नहीं। ना तो अहले ईमान सबके सब बराबर हैं और ना कुफ्फ़ार व मुशरिकीन सब एक जैसे हैं।

ना हर ज़न ज़न अस्त व ना हर मर्द मर्द
ख़ुदा पंज अंगश्त यकसा ना कर्द!

आयत 84

حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ 84؀

"यहाँ तक कि जब वह सब आ जायेंगे तो अल्लाह फ़रमाएगा: क्या तुमने मेरी आयात को झुठला दिया था हालाँकि तुमने इनका इल्मी अहाता नहीं किया था? या तुम लोग क्या करते रहे थे?"

यानि क्या तुम लोग वाक़िअतन मेरी आयात को समझ नहीं सके थे या फिर समझने के बाद तअस्सुब और हठधर्मी की वजह से इनका इन्कार करते रहे थे?

आयत 85

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ 85؀

"और वाक़ेअ हो जाएगी उन पर बात, इसलिये कि वह जुर्म के मुरतकिब हुए थे, चुनाँचे वह बोल नहीं सकेंगे।"

जब हक़ीक़त उन पर वाज़ेह कर दी जाएगी तो वह बोल नहीं सकेंगे, इसलिये कि उनके दिल तो दावत-ए-हक़ की हक्क़ानियत पर गवाही दे चुके थे, लेकिन अपनी ज़िद, हठधर्मी और तअस्सुब की बिना पर इन्होंने इस दावत को क़ुबूल नहीं किया था। क़ब्लअज़े इसी सूरत की आयत 14 में ऐसे मुन्करीन के इन्कार की कैफ़ियत पर यूँ तब्सिरा किया गया है: { وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ} कि इनके दिलों ने आयाते इलाहिया का यक़ीन कर लिया था मगर वह महज़ ज़िद, ज़ुल्म और सरकशी की बिना पर नहीं माने थे।

आयत 86

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ

"क्या वह देखते नहीं कि हमने बनाया है रात को ताकि वह उसमें आराम करें और दिन को रौशन बनाया है!"

अल्लाह तआला ने इंसानी ज़रूरियात के तहत रात को सुकून के लिये जबकि दिन को मआशी जद्दो-जहद के लिये साज़गार बनाया है।

"यक़ीनन इसमें निशानियाँ है उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।"

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ؁86

आयत 87

"और जिस दिन सूर में फूँका जाएगा तो घबरा उठेंगे वह सब जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह (महफ़ूज़ रखना) चाहे।"

وَ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ

नफ़ख-ए-सूर से एक अमूमी घबराहट आसमानों और ज़मीन की तमाम मख्लूक़ात पर तारी हो जाएगी, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह खुद इससे महफ़ूज़ रखना चाहे। जैसे आसमानों पर फ़रिश्ते।

"और सब हाज़िर हो जायेंगे उसके आगे आजिज़ी के साथ।"

وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ؁87

उस दिन सब लोग अल्लाह तआला के हुज़ूर सर झुकाए मौअद्दब खड़े होंगे।

आयत 88

"और तुम पहाड़ों को देखते हो और समझते हो कि वह ख़ूब जमे हुए हैं, और (उस दिन) वह चलेंगे जैसे बादल चलते हैं।"

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُــرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۭ

पहाड़ उस दिन बादलों की तरह उड़ते फिरेंगे। हवाई सफ़र के दौरान हम में से अक्सर ने बादलों की माहियत का क़रीब से मुशाहिदा किया होगा। ये बज़ाहिर देखने में ठोस नज़र आते हैं लेकिन जहाज़ बगैर किसी रुकावट के इन्हें चीरते हुए आगे गुज़र जाता है। क़यामत के दिन पहाड़ों की ठोस हैसियत को ख़त्म कर दिया जाएगा और वह ज़र्रात के गुब्बार में तब्दील होकर बादलों की तरह उड़ते फिरेंगे।

"ये अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को मोहकम बनाया है।"

صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۭ

ये अल्लाह की सन्नाई का करिश्मा है कि उसने इस वक़्त पहाड़ों को ऐसी मोहकम और ठोस सूरत दे रखी है, लेकिन क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपनी मशीयत से इन्हें धुन्की हुई रुई के गालों और बादलों की तरह बे-वज़न और नर्म कर देगा।

"यक़ीनन वह हर उस चीज़ से बा-ख़बर है जो तुम कर रहे हो।"

اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ؁88

आयत 89

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ

“जो कोई भी (उस दिन) नेकी लेकर आएगा तो उसके लिये उससे बेहतर सिला होगा।”

एक नेकी का अज्र दस गुना भी हो सकता है, सात सौ गुना भी और इससे भी ज़्यादा। बहरहाल नेकी का बदला बढ़ा-चढ़ा कर दिया जाएगा।

وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَىِٕذٍ اٰمِنُوْنَ ـــ89

“और वह उस दिन की घबराहट से अमन में होंगे।”

इससे क़यामत के दिन की घबराहट मुराद है जिसे सूरतुल हज की पहली आयत में {اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ} कहा गया है। अहादीस में आता है कि क़यामे क़यामत से पहले अल्लाह तआला मोमिनीन और सादिक़ीन को सुकून की मौत अता करके उस दिन की घबराहट से बचा लेगा। इसके अलावा इन अल्फ़ाज़ में इस मफ़हूम की गुंजाइश भी है कि अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को बअस अलमौत के बाद मैदाने हश्र की घबराहट से भी महफ़ूज़ रखेगा।

आयत 90

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۭ

“और जो कोई बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोगों के मुहँ आग में औंधे कर दिये जायेंगे।”

यानि उन लोगों को औंधे मुँह जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। اعاذنا اللہ من ذٰلک

هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ـــ90

“(और कहा जाएगा कि) तुम्हें बदले में वही तो दिया जा रहा है जो तुम अमल करते रहे हो।”

यानि इस सज़ा की सूरत में तुम्हारे साथ कोई ज़्यादती नहीं हो रही, बल्कि तुम्हारे आमाल के ऐन मुताबिक़ ही तुम्हें बदला मिल रहा है।

आयत 91

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا

“(देखो!) मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि मैं बंदगी करूँ इस शहर के रब की जिसने इसे मोहतरम क़रार दिया है”

इन आख़री आयात का अंदाज़ एक ऐलान का सा है। अगरचे इस ऐलान का आग़ाज़ लफ्ज़ “क़ुल” से नहीं हो रहा लेकिन अंदाज़ यही है कि ऐ नबी ﷺ! आप डंके की चोट ये ऐलान कर दीजिये। आप इन पर वाज़ेह कर दीजिये कि

मैं किसी 'बुत' किसी देवी या किसी देवता की परस्तिश की बजाय सिर्फ़ उस रब की बंदगी करता हूँ और उसी की बंदगी करता रहूँगा जिसने बैतुल्लाह को हरम ठहराया है और इस शहर की सरज़मीन को मोहतरम क़रार दिया है।

وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ 91

"और उसी के इख़्तियार में है हर चीज़, और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं शामिल हो जाऊँ उसके फ़रमाँबरदार बंदों में।"

आयत 92

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ

"और ये कि मैं तिलावत करूँ क़ुरान की!"

मुझे तीसरा हुक्म ये मिला है कि मैं क़ुरान पढ़ूँ, पढ़ कर लोगों को सुनाता रहूँ और इसकी तब्लीग करता रहूँ। सूरतुल मायदा में भी आपको ऐसा ही हुक्म दिया गया है: { يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ۭ } (आयत 67) कि ऐ नबी ﷺ! जो कुछ आपके रब की तरफ़ से आप पर नाज़िल किया गया है आप वह लोगों तक पहुँचा दीजिये और अगर बिलफ़र्ज़ आपने ऐसा ना किया तो ये गोया रिसालत के फ़राएज़ में कोताही शुमार होगी।

فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ

"तो जो कोई हिदायत पाएगा वह अपने ही भले के लिये हिदायत पाएगा।"

इस हिदायत के बदले में अगर वह आख़िरत में कामयाब क़रार पाता है और इसे { فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ڏ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ } (वाक़िया 89) से नवाज़ा जाता है तो इसमें उसका अपना ही भला है।

وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ 92

"और जो कोई गुमराही की रविश इख़्तियार करे तो आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ ख़बरदार करने वाला हूँ!"

जैसे किसी खुत्बे के आखिर में ये अल्फ़ाज़ कहे जाते हैं: وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ बिल्कुल इसी अंदाज़ में अब इस सूरत का इख्तताम हो रहा है:

आयत 93

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ

"और आप कह दीजिये कि कुल हम्द और कुल सना अल्लाह के लिये है, अनक़रीब वह तुम्हें अपनी आयात दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे।"

वَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ 93

"और आपका रब ग़ाफिल नहीं है उससे जो आमाल तुम कर रहे हो।"

بارک اللہ لی و لکم فی القرآن العظیم و نفعنی و ایاکم بالآیات والذکر الحکیم۔